

## बदलाव या रूपांतरण...?

- ब.कु. मनोरमा

हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती भरा कदम है, अपने जीवन में रूपांतरण करना। यानि कि बाह्य जगत से भीतर के जगत की ओर आगे कदम बढ़ाना। बाह्य परिवर्तन से आंतरिक परिवर्तन की ओर जाना, ये स्वयं में एक बहुत बड़ी चुनौती है।

बाह्य परिवर्तन यानि क्या? स्वयं के जीवन की अपार समस्याओं से थककर, निराश होकर जगत को छोड़ देना और साधू बन जाना, ये नहीं, जीवन में आने वाली अनेक आपत्तियों के डर से, निकट के स्वजन की विदाई के आघात से सन्यासी बन जाना, वो नहीं। अरे! इस जगत और जीवन में सुख अल्प है और संसार अपार दुःखों से भरा हुआ है, ऐसा मानकर कोई साधक संसार का त्याग करे तो बाह्य से आंतरिक रूपांतरण होना संभव नहीं। भीतर में सच्चा वैराग्य जगे, तब ही आंतरिक रूपांतरण होता है, यही सच्चा रूपांतरण है। संसार में जो भी भव्य उत्सव, महोत्सव या प्रसंग में होने वाली महिमाओं को देखा है, ऐसी ही महिमा करने का मन में होता

को ही मुख्य माना जाए, तो ऐसा भी हो सकता है कि व्यक्ति के अंदर का दीप जरा भी प्रागट्य ही ना हो। उसे सत्य की कोई प्राप्ति हो ही ना।

चीन के बीजिंग में रहते एक भिक्षु ने सत्य के शोध के लिए बहुत भ्रमण किया। इसी दौरान उसे एक मर्मज्ञ मिल गया। उसे लगा कि उनके पास से सत्य बात अवश्य जानने को मिलेगी। इसलिए उसने मर्मज्ञ से पूछा: 'मैं सत्य की खोज में निकला हूँ, परंतु अब तक मुझे सत्य हाथ नहीं लगा। मुझे सत्य का साक्षात् अनुभव करना है, और उस अनुभव से मुझे स्वयं को जागृत करना है।'

ज्ञानी मर्मज्ञ ने कहा: 'ये बात तो सही है, लेकिन इस सत्य को जानने के पहले मुझे तुझसे और कुछ पूछना है। तुम संसार में कितने वर्ष रहे?'

भिक्षुक ने कहा: 'बहुत वर्ष बिताये संसार में, लेकिन बाद में साधू बन गया, और उस मार्ग में विकास करते हुए आज मैं भिक्षुक बना हूँ।'

भूतकाल की बात बन गई। ये सब मैं छोड़ के आया हूँ। चावल का भाव ज़्यादा हो या कम हो, उसकी याद मेरे पास नहीं है। एक भिक्षुक के रूप में सब छोड़ दिया है, इसलिए मुझे माफ करना। मुझे कुछ भी याद नहीं है।' ये बात सुनकर ज्ञानी मर्मज्ञ मुस्कराये, 'देखो, आप बीजिंग में चावल का भाव कितना है, ये बता देते तो आप सत्य से कोसों दूर होते। सत्य को प्राप्त करने के लिए भूतकाल को भूलना ज़रूरी है। बहुत बार बहुत लोग जीवन भर बीजिंग के चावल के भाव को याद रखते हैं, और उसके परिणामस्वरूप उसे सत्य की प्राप्ति नहीं होती।'

इसका अर्थ यह है कि सत्य की प्राप्ति के लिए कल की बात को भूल जाना चाहिए। जैसे वैराग्य की प्राप्ति के लिए संसार को भूलना चाहिए, इसमें बाह्य रूपांतरण से आंतरिक रूपांतरण के मार्ग की ओर जाते वक्त मुख्य विषय व्यक्ति की जागरूकता है। अगर इतिहास के पन्नों को देखें, तो हममें आदि शंकराचार्य जैसे वैराग्य की तीव्रता है? महावीर राजकुमार वर्धमान थे, और वर्धमान की तरह जगत को जानते हुए भी शाश्वत खोज करने निकले थे। बुद्ध ने जगत की वेदनाओं से पार पाने के लिए महाभिनिष्क्रमण किया था। नरसिंह मेहता, संत तुकाराम या एकनाथ के जीवन में संसारी घटनाओं को हम ज़्यादा महत्व देते हैं। ये घटनायें बनी हैं ज़रूर, ये सत्य है, लेकिन महत्व की बात तो ये है कि घटनाओं के परिणामस्वरूप उनके हृदय में वैराग्य प्रकट हुआ, और उस वैराग्य से बाह्य में से आंतरिक रूपांतरण हुआ।

इस तरह आंतरिक रूपांतरण के लिए व्यक्ति को खुद की चित्त वृत्ति में परिवर्तन करना होगा। यदि वैराग्य नहीं जागा होगा, तो कुछ भी नहीं होगा, क्योंकि वैराग्य होने के बाद भी उसकी आंतरिक वृत्तियाँ उसे परेशान करती रहेंगी। ऐसा मनुष्य संसार में सदा मानव व्यवहार में डूबा हुआ रहेगा, दुविधा और विकल्पों में जीता रहेगा, भूतकाल के बोझ लेते हुए उसे वर्तमान में तोलता रहेगा। बाह्य आकर्षण है और व्यक्ति को ज़्यादा से ज़्यादा आकर्षित करता रहेगा। उसकी वृत्तियाँ दौड़-भाग करती रहेंगी और उसका मन उसे पोषण देता रहेगा।

**इसलिए ही सबसे महत्व की बात जीवन की सार्थकता को जानने की है। जो जीवन हम जी रहे हैं, वो कितना सार्थक है? आत्मा की ओर गति का लक्ष्य उसमें संलग्न है या फिर आत्मा के सिवा और बातें दिखती हैं! मनुष्य पूरी दुनिया देखता है, लेकिन खुद के जीवन को नहीं देखता, और जीवन को भी देखता है तो बस ऊपर-ऊपर से ही। भीतर में जाता ही नहीं। और कितने मनुष्य अंतिम समय में 'हम जीते थे' ऐसा एहसास करते हैं। सत्य को पाने के लिए बाह्यता को जानते हुए उनका उतनी ही हृद तक उपयोग करना। लेकिन रूपांतरण के लिए भीतर की दुनिया की, आत्मा की सत्य पहचान कर उसे जो चाहिए वो भीतर से ही पाने की दिशा में आगे बढ़ना। तभी तो ट्रांसफॉर्मेशन होगा ना! सिर्फ बदलाव नहीं, लेकिन रूपांतरण।**

**जीवन की सार्थकता को जानना है। जो जीवन हम जी रहे हैं, वो कितना सार्थक है? आत्मा की ओर गति का लक्ष्य उसमें संलग्न है या फिर आत्मा के सिवा और सब बातें दिखाई देती हैं!**



रहेगा, तो इसे परिवर्तन नहीं कहेंगे। जगत में सम्पत्ति का महत्व या सत्ता का बोलबाला देखा था, वैसे ही अगर साधना के मार्ग पर चलते हुए उसका प्रभाव आ जाता है तो उसे रूपांतरण नहीं कहेंगे।

ऐसे बाह्य से, संसार से, भीतर की आत्मा की दुनिया में प्रवेश करते वक्त बाह्य का तिरस्कार करना नहीं, बाह्य के एक-एक स्थान का योग्य अर्थ में महत्व है ही, उसको समझना है। आत्मा भले ही अंतर में बसती हो, लेकिन अंततः वो व्यक्तित्व में जीवंत हो शरीर में प्रवेश करके ही तो बात करती है। जप, तप और कर्मकाण्ड बाह्य रूप से भले होता हो, परंतु अंत में तो उसका सात्विक उजाला अंतर में ही फैलता है। यानि कि बाह्य की सम्पूर्ण उपेक्षा कर भीतर में जा नहीं सकते।

परंतु बाह्य की भी एक मर्यादा समझ लेनी चाहिए। एक तो बाह्य, बाह्य तो है ही, भीतर में नहीं। भीतर की बात पूर्ण रूप से अलग है। इसलिए ही बाह्य अर्थ में वो मर्यादित बनती है जितना भीतर के लिए उपकारक न हो। जैसे कि बाह्य में चलती धर्म प्रवृत्तियों का कुछ अर्थ ही नहीं है। व्यक्ति धर्म के अनुष्ठानों में भाग लेकर तप, जप, स्वाध्याय आदि करे, लेकिन यदि भीतर के साथ उसका कोई तार-तन्तु बंधा हुआ ना हो, तो बाह्य प्रवृत्ति मात्र बाहर तक ही सीमित रहती है। उसका उद्दीकरण नहीं होता। सिर्फ बाह्य कर्मकाण्ड

ज्ञानी मर्मज्ञ ने पूछा: 'फिर तो आपके जीवन की यात्रा बहुत लम्बी है। संसार में होते हुए सन्यास तक की। परंतु मेरा प्रश्न बहुत सरल और सामान्य है।'

भिक्षुक ने पूछा: 'कहाँ है आपका प्रश्न?' फिर मर्मज्ञ ने कहा: 'मुझे जानना है कि, जब आप बीजिंग से निकले थे, तब चावल का भाव क्या था? क्या भाव बढ़ गया है या बहुत घट गया है? लोग महंगाई के सम्बन्ध में फरियाद करते थे या नहीं?'

भिक्षुक ने कहा: 'मैं कब का ही बीजिंग छोड़ चुका हूँ। जिस संसार को मैंने छोड़ दिया, उस तरफ दृष्टि मैं करता नहीं। जिस रास्ते को मैं छोड़ देता हूँ, उसे मैं भूल जाता हूँ।'

'ऐसा क्यों करते हो?' 'उसका कारण ये कि अतीत बहुत बार भविष्य को कोहरे समान धुंधला बना देता है। भविष्य दिखाई नहीं पड़ता। पीछे के रास्ते की याद आगे के रास्ते को जानने में अवरोध रूप बनता है। इस आँख का ही विचार करिये ना! वो एक ही ओर देखती है, या तो आगे या तो पीछे। एक साथ आगे और पीछे देख नहीं सकती, इसलिए पीछे देखते रहें तो आगे कुछ भी दिखाई नहीं देता। आगे देखना है तो पीछे को तजना पड़ता है।'

मर्मज्ञ ने पूछा: 'आप क्या कहना चाहते हो?' भिक्षुक: 'मुझे तो इतना ही कहना है कि बीजिंग में चावल का भाव क्या था, ये तो



**अजमेर-धोला भाटा(राज.)।** अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में महिलाओं का योगदान' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जिला प्रमुख वंदना नोगिया, पार्षद सभा खान, गुलसा, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. कल्पना, ब्र.कु. इंद्रा तथा ब्र.कु. योगिनी।



**वही-हि.प्र.।** नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'ओम शान्ति भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सुषमा, ब्र.कु. शकुंतला, ब्र.कु. अरुण, म्युनिसिपैलिटी चेयरमैन मदनलाल चौधरी, सी.ई.ओ. राजिब शर्मा तथा अन्य।



**चण्डीगढ़-से.33 ए.।** 'गरिमामय वृद्ध जीवन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. अमीरचन्द, डॉ. महेश हेमाद्री, मा.आबू तथा अन्य वरिष्ठ जन।



**भीलवाड़ा-राज.।** दो दिवसीय कला संस्कृति समारोह के अंतर्गत 'आध्यात्मिकता से कला में निखार' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि एडिशनल कलेक्टर आनंदीलाल वैष्णव। मंचासीन हैं कवि अरुण अजीज, लोक कलाकार रमेश बूलिया, ब्र.कु. इंद्रा, ब्र.कु. कुसुम, नेशनल कोऑर्डिनेटर, आर्ट एंड कल्चर विंग, ई.टी.वी. संवाददाता प्रमोद तिवारी, ब्र.कु. सतीश, मा.आबू, डॉ. कमलाकांत शर्मा, कवि प्रहलाद पारीक तथा राष्ट्रीय कवि राजेन्द्र गोपाल व्यास।



**खामाणो-लुधियाना(पंजाब)।** अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'विश्व के नवनिर्माण में नारी का योगदान' विषयक कार्यक्रम में उपस्थित हैं सरपंच सुलोचना बहन, उमा राणा स्कूल की वाइस प्रिन्सीपल शालू बहन, लेखिका मनजीत कौर, गुरुद्वारे की प्रधान राजेन्द्र कौर, ब्र.कु. निलिमा तथा ब्र.कु. सुरभि।



**फर्रुखाबाद-कायमगंज।** शिव जयंती के कार्यक्रम में मंचासीन हैं महर्षि महेश योगी, मुख्य अतिथि एवं पालिकाध्यक्ष मिथलेश अग्रवाल, अमर सिंह खटिक, ब्र.कु. मंजू तथा ब्र.कु. मनोरमा।